काशी के स्थापत्य में आलंकारिक अभिप्राय

डॉ. आभा मिश्रा पाठक

आलंकारिक अभिप्राय कला शिल्प को आकर्षक बनाने हेतु प्रयोग होते हैं। मूर्ति शिल्प हो अथवा चित्रकला अथवा स्थापत्य - सभी आलंकारिक अभिप्रायों से सुसज्जित हो नवीन आकर्षणयुक्त दिखायी देते है। इन आलंकारिक अभिप्रायों में प्रतीक भी सम्मिलित होते हैं। कभी कभी एक ही आलंकारिक अभिप्राय को पंक्ति रूप में संयोजित करके नयनाभिराम एवं आकर्षक प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है। वस्तुतः कला शिल्प में आलंकारिक अभिप्राय आंशिक रूप में दिखाये जायें अथवा पूर्ण रूप में या पंक्तिबद्ध स्वरूप में, वह शिल्प सौन्दर्य में आलंकारिक मूल्य की वृद्धि ही करते हैं।[1]

भारतीय स्थापत्य को अलंकृत करने के लिए आरम्भ से ही कुछ अभिप्राय विशेषतः प्रयोग किये जाते रहे हैं। यदि इनका वर्गीकरण किया जाये तो प्रथम वर्ग में देवी देवताओं की विशिष्टतम मूर्तियाँ सम्मिलित होंगी।[2] द्वितीय वर्ग में मानव जीवन से जुड़ी घटनायें एवं दैनिक क्रियाकलाप, कथा आदि रखे जा सकते हैं। तृतीय वर्ग में पशु पक्षी जैसे हस्ति, अश्व आदि, चतुर्थ वर्ग में मांगलिक प्रतीक यथा - पूर्ण कुम्भ, चक्र, कीर्तिमुख आदि तो पंचम वर्ग में वह आलंकारिक अभिप्राय आयेंगे जो वस्तुतः स्थापत्य को आकर्षक बनाने हेतु अलग-अलग प्रारूप में आमूर्तित किये जाते हैं।

अपुनर्भवभूमि, रूद्रावास, महाश्मशान अथवा अविमुक्त क्षेत्र[3] तथा सुरूंधन (सुरक्षित), सुदर्शन (दर्शनीय), ब्रह्मवर्द्धन, पुष्पवती, रम्यनगर, मोलिनी (मुकुलिनी)[4] आदि नामों से सम्बोधित काशी को कासिनगर अथवा कासीपुर[5] भी कहा गया है। आरम्भ में काश्य द्वारा स्थापित होने के कारण काशी[6] तथा मध्यकाल में वाराणसी तत्पश्चात बनारस के नाम से विश्वविख्यात इस नगर का नाम औरंगजेब ने अपने शासन काल में मुहम्मदाबाद रख दिया।[7] जो उसके शासनकाल के साथ ही विस्मृत भी हो गया।

काशी पर मनु वंशज, दिवोदास अन्य राजाओं के शासन के उल्लेख मिलते हैं परन्तु ऐतिहासिक साक्ष्यों में चेदिवंशीय गांगेय देव (1015-1041) एवं उसके पुत्र लक्ष्मीकर्ण द्वारा काशी में मंदिर बनवाने के संदर्भ विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। साथ ही गहड़वाल शासक गोविन्द चन्द्र (1110) द्वारा भी काशी में अनेक मंदिरों के निर्माण का उल्लेख प्राप्त होता है।[8] काशी का कर्दमेश्वर मंदिर गहड़वाल कालीन रचना ही मानी जाती है। मुस्लिम शासकों की कट्टरता एवं धार्मिक रूढ़िवादिता के प्रहार से कम्पित काशी के मंदिर स्थापत्य को मराठों ने विशेष रूप से सजाया-संवारा।

बिन्दुमाधव का द्वितीय मंदिर (1755 ई.), भोंसले मंदिर (लक्ष्मीनारायण मन्दिर, 1794 ई.), काल भैरव मंदिर (1825 ई.) मराठों द्वारा ही निर्मित हुए। सम्प्रति काशी मात्र मंदिरों के लिए ही नहीं अपितु घाटों, कोठियों, साथ ही मस्जिदों के लिए विख्यात हो चुकी है। प्रस्तुत लेख 18वीं से 20वीं शती के मध्य

काशी में निर्मित स्थापत्य विशेषतः मंदिर स्थापत्य के संदर्भ में ही आलंकारिक अभिप्राय की चर्चा की गयी है।

काशी के मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से 18वीं से 20वीं शती का काल विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसी समय विशिष्ट मंदिरों यथा भोंसले मंदिर (1761 ई.), समराजेश्वर मंदिर, (ललिता घाट, ल.1841 ई.), गौतमेश्वर मंदिर (1943 ई.), दुर्गा मंदिर (ल. 18वीं शती ई.) आदि का निर्माण हुआ। अपने आकर्षक शिल्प संयोजन एवं आलंकारिक अभिप्राय की दृष्टि से भी यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। काशी के मंदिर स्थापत्य में पूर्णघट, पद्मकोष, पद्मलता, घटस्तम्भ, शृंखलाबद्ध घंटियॉं, पत्रतोरण, पुष्पतोरण, मकरतोरण, कीर्तिमुख, घूंडीदार कंगूरें, पत्तीनुमा कंगुरे, वृतकटाव युक्त छज्जे एवं छतरियॉं, समचतुर्भुज ;स्रमदहवद्ध अभिप्राय, वेणी जैसे अभिप्राय ;च्संपजमक ंदक विसकमक डवजपेंद्धिए कोनिया आकृति या ठतंबामज थ्पहनतम के रूप में स्त्री आकृतियों का अंकन विशेष लोकप्रियता से किया गया है।

समचतुर्भुज अभिप्राय

काशी के मंदिरों में प्रस्तुत अभिप्राय विशेष लोकप्रियता से अंकित किया गया है। अधिकांशतः सामान्य स्वरूप में समचतुर्भुज पंक्ति से द्वारपार्श्व को अलंकृत किया गया है (रेखाचित्र 1)। इसी दृष्टि से अमेठी मंदिर (ब्रह्मनाल), वृहस्पतेश्वर मंदिर (दशाश्वमेध घाट), दुर्गा मंदिर (रामनगर), गौतमेश्वर मंदिर (गौदोलिया) विशेष उल्लेखनीय हैं। गौतमेश्वर मंदिर के स्तम्भों पर समचतुर्भुज अभिप्राय अत्यन्त आलंकारिक रूप में दर्शाया गया है। मात्र मंदिर स्थापत्य में ही नहीं अपितु काशी के मुस्लिम स्थापत्य में भी समचतुर्भुज अभिप्राय देखा जा सकता है जैसे चौखम्भा की मस्जिद के मुख्य द्वार पर समचतुर्भुज पंक्ति का अलंकरण देखा जा सकता है।

पुष्प अभिप्राय

काशी के मंदिर स्थापत्य में दूसरा सर्वाधिक लोकप्रिय आलंकारिक अभिप्राय विभिन्न प्रकार के पुष्प हैं। अधिकांशतः मंदिरों में द्वार के उर्ध्व भाग में दोनों ओर पूर्ण विकसित कमल का अंकन देखा जा सकता है यथा - दुर्गा मंदिर, गौमतेश्वर मंदिर, अमेठी मंदिर, भोंसले मंदिर, वृहस्पतेश्र मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर आदि। यहॉं प्रवेश द्वार के साथ ही साथ स्थान-स्थान पर पद्म को विविध प्रकार से स्तम्भ एवं भित्तियों पर अंकित किया गया है। इस संदर्भ में स्वामी नारायण मंदिर पर अंकित विविध प्रकार के पुष्प महत्त्वपूर्ण हैं। यही नहीं यहॉं के स्थापत्य में पद्मकोष या पुष्पलता पंक्ति भी आकर्षक रूप में देखी जा सकती है (रेखाचित्र 2) नगवां चुंगी पर स्थित कृष्णबाग द्वार पर इसकी सुन्दरतम् अभिव्यक्ति हुयी है।

पत्रलता अभिप्राय

काशी के स्थापत्य में पत्ती (पत्र) के समान आलेखन भी विशेष रूप से उत्कीर्ण किया गया है। मुख्यतः पत्र पंक्ति के रूप में इन्हें द्वारशाखा पर दर्शाया गया है (रेखाचित्र 3)। साथ ही घटपल्लव से निकलती सुन्दरतम् पत्तियॉं एवं स्वत्रंत रूप में यत्रतत्र पत्तियों का आकर्षक संयोजन काशी स्थापत्य की अन्य विशेषता है।

कंगुरेदार अभिप्राय

काशी के मंदिर, मस्जिद, कोठी द्वारा यहाँ तक की आवासीय गृहों में कंगूरों की सज्जा मिलती है। कहीं यह वृत्त कटाव युक्त है (शिव मंदिर, बांसफाटक, लक्ष्मी नारायण मंदिर, भोंसले घाट) तो कही अर्धविकसित पद्म के अनुरूप (दुर्गामंदिर - रामनगर, वृहस्पति मंदिर - दशाश्वमेघ घाट)। धरहरा मस्जिद में पुष्प की पत्तियों के अनुरूप कंगुरों की सज्जा मिलती है। (रेखाचित्र)

शृंखलाबद्ध घंटियाँ

मध्यकालीन मंदिरों के अनुरूप काशी के मंदिरों पर भी शृंखलाबद्ध घंटियों का अंकन मिलता है। गुजरात, राजस्थान एवं मध्य प्रदेश में ऐसे अभिप्राय विशेष लोकप्रिय रहे हैं। यही नहीं अकबर के काल में निर्मित जोधाबाई प्रासाद (फतेहपुर सीकरी) में शृंखलाबद्ध घंटियों से संयोजित स्तम्भ देखे जा सकते हैं। काशी में इस प्रकार की शृंखलाबद्ध घंटियों से आवृत स्तम्भ गौतमेश्वर मंदिर, वृहस्पतेश्वर मंदिर, अमेठी मंदिर, दुर्गा मंदिर के स्थापत्य में विशेष रूप से देखे जा सकते हैं। परन्तु गौतमेश्वर मंदिर के शिखर के निचले हिस्से पर संपृक्त छोटी-छोटी घंटियों की रचना अत्यन्त आकर्षक लगती है। इस दृष्टि से समराजेश्वर मंदिर के कपाट पर अंकित घंटियों के आलंकारिक अभिप्राय भी नयनाभिराम प्रतीत होते हैं (रेखाचित्र 5)।

पूर्णघट या घट पल्लव

भारतीय प्रतीकों में विशेष लोकप्रिय घटपल्लव अथवा पूर्णकुम्भ का अंकन काशी के मंदिरों में मुख्यतः स्तम्भों के आधार भाग हुआ है। इसे आकर्षक पल्लवों से सुसज्जित दिखाया गया है। इस प्रकार के स्तम्भों की दृष्टि से वृहस्पतेश्वर मंदिर के स्तम्भ पर उत्कीर्ण घटपल्लव विशेष आकर्षक हैं। अमेठी मंदिर, गौतमेश्वर मंदिर, दुर्गा मंदिर, भोंसले मंदिर में भी घटस्तम्भों का संयोजन मिलता है।

कीर्तिमुख

मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से कीर्तिमुख मध्यकाल में आलंकारिक अभिप्राय के रूप में विशेष लोकप्रिय हुआ। काशी के मंदिरों पर कीर्तिमुख की इतनी लोकप्रियता नहीं दिखायी देती। मुख्यतः दो मंदिरों में ही कीर्तिमुख अभिप्राय दिखायी देता है। भोंसले मंदिर में कीर्तिमुख पंक्ति अधिष्ठान भाग पर अंकित है। जबकि कुछ परिष्कृत रूप में कीर्तिमुख पंक्ति समराजेश्वर मंदिर की भीत्ति के उर्ध्व भाग पर उत्कीर्ण की गयी है।

स्त्री आकृतियाँ

भारतीय कला में शालमंजिका एवं अप्सराओं की आकर्षक भंगिमा एवं मुद्राओं के कारण विशेष लोकप्रियता मिली। काशी में स्थापत्य को अधिक आकर्षक बनाने की नीति के अन्तर्गत स्त्री आकृतियों को ठतंबामज थ्पहनतम या कोनिया आकृति के रूप में उत्कीर्ण किया गया है। इस दृष्टि से अमेठी मंदिर, दुर्गा मंदिर एवं स्वामी नारायण मंदिर उल्लेखनीय है। इनमें अमेठी मंदिर एवं दुर्गा मंदिर में स्त्री

संगीतकारों को (स्वतंत्र मूर्ति रूप में तथा विविध मुद्राओं में) घट की धरन संभाले उत्कीर्ण किया गया है। इनकी वेशभूषा भी पर्याप्त साम्य रखती है। परन्तु स्वामी नारायण मंदिर (मछोदरी) में महिला संगीतकारों के स्थान पर (पूर्ण सुसज्जित अभयमुद्रा में) स्त्री आकृतियॉं स्तम्भों के ऊपर ठतंबामज थ्पहनतम के रूप में बनायी गयी हैं।

तोरण द्वार के विभिन्न प्रकार

काशी के स्थापत्य में अर्द्धवृत्त कटाव वाले तोरण द्वार विशेषतः दिखायी देते हैं। यथा - गौतमेश्वर मंदिर, दुर्गा मंदिर, भोंसले मंदिर, पीताम्बरा देवी मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर, दुर्गा मंदिर, चौखम्भा मस्जिद आदि। कहीं-कहीं छज्जों के उर्ध्व भाग में भी अर्द्धवृत कटाव युक्त छतरियों की रचना देखी जा सकती है। अर्द्धवृत कटाव के साथ ही पत्रपुष्प से सज्जित तोरण की संयोजना भी काशी के मंदिरों में मिलती है जो मध्यकालीन स्थापत्य के मकरतोरण के अनुरूप है। भोसले मंदिर, दुर्गा मंदिर, अमेठी मंदिर, वृहस्पतेश्वर मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर में इस प्रकार के आकर्षक तोरण द्वार देखे जा सकते हैं। इसके साथ ही दुर्गा मंदिर में मयूर तोरण एवं स्वामी नारायण में हंसतोरण की संयोजना मिलती है।

भ्रमित स्थापत्य

काशी के मंदिर स्थापत्य में गौतमेश्वर मंदिर में भ्रमित स्थापत्य अभिप्राय की भी परम्परा मिलती है। प्रभुनारायण सिंह के काल में निर्मित इस मंदिर में स्तम्भों पर अंध-कपाट तथा भित्तियों पर रेखादेवुल के अनुरूप शिखर युक्त अंध-गवाक्ष आलंकारिक अभिप्राय के रूप में उत्कीर्ण किये गये हैं।

अलंकृत छत

गुजरात, राजस्थान के मंदिरों के अनुरूप ही काशी के मंदिरों में भी मण्डप की छत पर पुष्पाकृतियों का आकर्षक संयोजन मिलता है। इनमें पंखुड़ी युक्त गुलाब, पद्म कोष, पूर्णविकसित पद्म के विशिष्ट प्रकार सम्मिलित हैं। भोंसले मंदिर एवं स्वामी नारायण मंदिर तथा अमेठी मंदिर में पूर्ण विकसित पद्म का अंकन मिलता है तो गौतमेश्वर मंदिर की छत के मध्य में बड़ा पुष्प तथा उसके चारों ओर छोटे-छोटे पुष्पों की सज्जा मिलती है।

इन समस्त अलंकृत अभिप्रायों के साथ ही काशी के विभिन्न मंदिरों पर कुछ विशिष्ट आलंकारिक अभिप्राय भी मिलते हैं। जैसे अमेठी मंदिर में रूपस्तम्भ तथा छत की धरन संभालें कीचक की आकृतियॉं मिलती हैं तो स्वामीनारायण मंदिर में गुजरात के मंदिरों के समान अठपहल, षोडशपहल स्तम्भ की संयोजना दिखायी देती है। समराजेश्वर मंदिर में नरमुण्ड पंक्ति, गंधर्व, मुक्तामालायें, सिंह मुख पंक्ति, वनलता का अंकन मिलता है तो पीताम्बरा देवी मंदिर में मयूरपंख के अनुरूप पत्र सज्जा दिखायी देती है। अमेठी मंदिर, गौतमेश्वर मंदिर एवं भोंसले मंदिर के स्तम्भों की पत्रसज्जा आकर्षक संयोजना प्रस्तुत करती है। मंदिर ही नहीं काशी के पुराने आवासीय घरों में भी पूर्णकुम्भ, पद्मलता से संपृक्त स्तम्भ, मयूर, हंस, मछली, कमल पुष्प, आलंकारिक पुष्प-पत्तियों के अभिप्राय देखे जा सकते हैं। वस्तुतः काशी के स्थापत्य में आलंकारिक अभिप्राय एक विस्तृत अध्ययन का विषय है।

पाद टिप्पणी

1. सुदीपा बन्द्योपाध्याय - आर्किटेक्चुरल मोटिफ्स इन अर्ली मीडिवल आर्ट ऑफ ईस्टर्न इण्डिया, कोलकाता, 2002, पृ.1
2. वासुदेवशरण अग्रवाल - भारतीय कला, वाराणसी, 1956, पृ.53
3. विश्वनाथ मुखर्जी - बना रहे बनारस, काशी, 1958, पृ.9-10
4. उमा पाण्डेय - भारत के सांस्कृतिक केन्द्र, वाराणसी, 1980, पृ.6
5. हेमचन्द्रराय चौधरी - पालिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐश्यिंट इण्डिया, कोलकाता, 1972, पृ.68
6. विश्वनाथ मुखर्जी - पू.नि., पृ.1
7. बनारसी लाल पाण्डेय 'आर्य' - महाराज बलवन्त सिंह और काशी का अतीत, वाराणसी, 1955, पृ.209-210
8. उमा पाण्डेय - पू.नि., पृ.31

चित्र सूची

1. शृंखलाबद्ध घंटियाँ, स्तम्भ, गौतमेश्वर मंदिर, गोदौलिया
2. घटपल्लव स्तम्भ, वृहस्पतेश्वर मंदिर, दशाश्वमेधघाट
3. कीर्तिमुखपंक्ति, समराजेश्वर मंदिर, ललिताघाट
4. स्त्री कोनिया आकृति, दुर्गामंदिर, रामनगर